Volume-4, No. I, Feb-2017, pp.Hin.- 23-24

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

श्री सतवीर सिंह, शोधार्थी (शिक्षा शास्त्र)
आई.एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

सार– शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली एक ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया है जो मानव को अपनी भूमिका प्रभावी ढ़ंग से अदा करने में सक्षम बनाती है एवं राष्ट्र के विकास में सहयोग प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही बालक धर्म, राज्य समुदाय, सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उसमें राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक तत्व एवं अनिवार्य घटक ''समाज के साथ समायोजन'' की क्षमता का विकास होता है। लेकिन यह तभी सम्भव है जब बालक शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो। अर्थात् शारीरिक और मानसिक रूप से उसमें शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता हो क्योंकि एक स्वस्थ व्यक्ति ही अपने जीवन, समाज और राष्ट्र के प्रति पूर्ण योगदान कर सकता है।

मुख्य शब्द– उच्च माध्यमिक स्तर, शैक्षिक समायोजन, शोध विधि, शोध विधि, शोध के उद्देश्य, शोध की मुख्य परिकल्पनाए, निष्कर्ष।

एक शिक्षक विद्यार्थी की आवश्यकता, क्षमता रूचि, योग्यता, विशेषताः आदि को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करता है। उन विद्यार्थियों में कुछ विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं जिनकी आवश्यकता, क्षमता, योग्यता एवं रूचि सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न होती है। यह बालक संवेगात्मक रूप से मजबूत नहीं होते हैं और कक्षा तथा कक्षा के बाहर समायोजन नहीं कर पाते जिस कारण इनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है तथा उनका सर्वांगींण विकास भी प्रभावित होता है।

आवश्यकता एवं महत्व– विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों में कुछ विषय कुसमायोजित विद्यार्थियों के मानसिक स्तर से ऊपर के स्तर के होते हैं। इन विषयों को समझने के लिए कुसमायोजित विद्यार्थियों को अतिरिक्त शैक्षिक प्रयास कराना परिवार व विद्यालय का कार्य है। परन्तु इन दोनों के ध्यान न देने के कारण इनमें शैक्षिक पिछड़ापन आ जाता है। कुसमायोजित विद्यार्थियों के पिछड़ेपन के कई और भी कई कारण है। जिनमें मुख्यतः उनका दूषित वातावरण एवं संवेगात्मक असन्तुलन है जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है उनके कुसमायोजन का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि, सीखने में सृजनात्मकता, रूचि, स्मृति और अभिव्यक्ति आदि पर सीधा पड़ता है। जो इनके शैक्षिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़ेपन का मुख्य कारण है। इन विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन पर ध्यान नहीं दिया गया तो इनका सर्वांगींण विकास भी प्रभावित हो जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से प्राप्त निष्कषों के द्वारा इन विद्यार्थियों की शैक्षिक समायोजन क्षमता को बड़ाने का प्रयास किया जायेगा

शिक्षा में निम्नलिखित शोधार्थियों ने अपने अध्ययन में समायोजन से सम्बन्धित विद्यार्थियों पर प्रकाश डाला है। जिसमें सी0आर0 परमेरा (1973), एस0 गरवार (1974), सिंह आर0 (1978)ए आशा0 टी0 (1980), सक्सेना आर0 (1983), अमीना एम0 (1991), जी0 देवराज (1992), कुमार एस0 (2007), मीणा डी0के0 (2010) एवं कुमार आर0 (2013) प्रमुख हैं।

समस्या कथन–उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

शब्दों का परिभाषिकरण

उच्च माध्यमिक स्तर–उच्च माध्यमिक स्तर से आशय कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा प्रदान करने से है।

शैक्षिक समायोजन–स्कूल में नई परिस्थितियाँ नये साथी नये शिक्षक नया वातावरण नया पाठ्यक्रम नया विद्यालय आदि के साथ सभी विद्यार्थियों को तालमेल बिठाना पड़ता है। शैक्षिक वातावरण में वालक जितनी अच्छी तरह से स्वयं को समायोजित कर लेता है व शैक्षिक समस्याओं को सुलझााने में सफल हो जाता है। वह बालक उतना ही अच्छा शैक्षिक समायोजन वाला होता है।

शोध विधिः–वर्तमान शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरणः–वर्तमान शोध हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श–वर्तमान शोध हेतु कक्षा 11 एवं 12 के विद्यालयों में अध्ययन करने वाले लगभग 100 विद्यार्थियों को शामिल कर उनको लिंग, क्षेत्र एवं जाति में वर्गीकृत किया किया गया है।

चर–स्वतन्त्र चर–विद्यार्थी, **आश्रित चर–**शैक्षिक समायोजन

शोध के उद्देश्य–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध की मुख्य परिकल्पनाएं –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–1

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
छात्र	50	64.58	9.66	98	8.13
छात्रायें	50	62.68	4.55		

व्याख्या :–तालिका से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमांक 64.58 एवं 9.66 प्राप्त हुआ है। जबकि छात्राओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 62.68 एवं 4.55 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात का मान 8.13 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से अधिक है। अधिक मान सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। अतः छात्रों एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 1 स्वीकार की जाती है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थी एवं शहरी विद्यार्थी के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या विश्लेषण एवं व्याख्या–तालिका संख्या–2

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्य मान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
ग्रामीण विद्यार्थी	50	56.12	4.11	98	2.15
शहरी विद्यार्थी	50	55.20	4.36		

व्याख्या :–तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमांक 56.12 एवं 4.11 प्राप्त हुआ है। जबकि शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 55.20 एवं 4.36 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात का मान 2.15 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से अधिक है। अधिक मान सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। अतः ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 2 स्वीकार की जाती है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थी एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी के शैक्षिक समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

विश्लेषण एवं व्याख्या–

तालिका संख्या–3

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्य मान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
कला वर्ग के विद्यार्थी	50	54.95	5.20	98	2.97
विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी	50	56.84	4.66		

व्याख्या–तालिका से स्पष्ट है कि कला वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमांक 54.95 एवं 5.20 प्राप्त हुआ है। जबकि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 56.84 एवं 4.66 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात का मान 2.97 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से अधिक है। अधिक मान सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। अतः कला वर्ग के विद्यार्थियों एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 3 स्वीकार की जाती है।

शोध के निष्कर्षः–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः हमारी परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः हमारी परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः हमारी परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

गुप्ता एस०पी०, 'शिक्षा मनोविज्ञान'' शाखा प्रकाशन मेरठ।

युग किबंल, शिक्षा मनोविज्ञान की आधार शिला, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

गुप्ता एस०पी० – 'शिक्षा मनोविज्ञान'' शाखा प्रकाशन मेरठ।

युग किबंल – शिक्षा मनोविज्ञान की आधार शिला, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

जोसेफ आर०ए० – पुनर्वास के आयाम, समाकलन प्रकाशन करौंदी, बनारस।

शर्मा आर० – चाइल्ड साइकोलॉजी, एटलांटिक प्रकाशन एवं वितरक, दिल्ली।

मंगल एस०के० – शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

कपिल एच.के. – अनुसंधान विधियाँ –भार्गव प्रिन्टर्स, आगरा।

त्रिपाठी, शालिग्राम – शिक्षण व्यवहार, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.

पांडे, आर0एस0 – शिक्षा की समसामयिक समस्यायें, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.